International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-12-2022, Accepted: 06-01-2023, Published: 23-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 28-30

बहुविषय के ज्ञाता–अज्ञेय (अरे यायावर रहेगा याद रचना के संदर्भ में)

डॉ. सविता अजित सिंग[1], कांबळे रेश्मा मारूती[2]
[1] प्रोफ़ेसर, अण्णासाहेब मगर महाविद्यालय, हडपसर, पुणे, महाराष्ट्र, भारत
[2] पीएच डी, शोधछात्रा, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
'अरे यायावर रहेगा याद' (1953) यह रचना जिसमें 'अज्ञेय' की भारतीय यात्राओं का विशद चित्रण है। इस रचना में भौगोलिक सूचनाओं के अतिरिक्त संस्कृति, सभ्यता, दर्शन एवं इतिहास की विस्तृत जानकारी मिलती है। यह रचना अपने काल के भीतर और बाहर झाँकते हुए सांस्कृतिक विमर्श को प्रस्तुत करती है। इस रचना में यात्रा तथा संस्मरण का पंचमेल है। अनजानों व्यक्तियों, स्थलों, और दृश्यों के संस्मरण, विवरण बड़े मनोहारी बन पड़े है। इस कारण इसमें एक ओर नए वातावरण का वर्णन है तो दूसरी ओर प्राचीन इतिहास का उद्‌घाटन किया गया है। रचना में लेखक ने मानव जीवन की संपूर्णता को रूपायित किया है। सार रूप में कहा जाये तो अज्ञेय का यह यात्रा विवरण साहित्य–संस्कृति, जीवनशैली, विचार इत्यादि भावबोध का पूरा पूँज है।
बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय का यात्रा–साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्य के सभी विधाओं में नवीनता का प्रयोग करनेवाले लेखक के रूप में अज्ञेय की पहचान है। अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। पिता का नाम हीरानंद शास्त्री, एम. ए. पीएच. डी. पुरातत्व विभाग में कार्यरत थे तथा कर्तारपुर पंजाब के निवासी थे। वे कसिया गोरखपुर में जब खुदाई का काम कर रहे थे, तब वहीं 7 मार्च 1911 ई. को अज्ञेयजी का जन्म हुआ था। अज्ञेयजी अपने पिताजी के साथ अनेक प्रांतों में रह चुके थे, अनेक प्रांतों में रह चुके थे, अनेक प्रांतों में उन्होंने यात्राएँ की थीं वहाँ के स्कुलों में भी पढ़ चुके थे।
अज्ञेय की पहचान हमारे सामने एक कवि, उपन्यासकार, कहानी–लेखक, आलोचक, निबंध लेखक, गद्यगीत लेखक, पत्रकार, यात्रा–साहित्य लेखक एवं उच्चकोटि के मनोविश्लेषक के रूप में आते है। हिंदी मासिक पत्रिका 'विशाल भारत' के भूतपूर्व संपादक भी आप रह चुके हैं। साथ ही 'सैनिक' प्रतीक जैसे पत्रों का संपादन भी आपने किया है। अज्ञेय ने हिंदी साहित्य के सभी क्षेत्रों में रचनाएँ की है। उपन्यास तथा काव्य में विशेषकर योगदान दिया है। हिंदी साहित्य को बहुत सी कृतियाँ अज्ञेय ने दी है। इनकी रचनाओं में भावात्मकता से अधिक संकेतात्मकता और बौद्धिकता अधिक रहती है। अज्ञेय ने हिंदी साहित्य को विशेषकर गद्य को बौद्धिक सूक्ष्मता प्रदान की है। हिंदी यात्रा–साहित्य पर इनका एक प्रसिद्ध ग्रंथ 'अरे यायावर रहेगा याद' नाम से है। 228 पृष्ठों का यह ग्रंथ सन् 1953 ई. में सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। इस ग्रंथ के संदर्भ में डॉ. सुरेंद्र माथुर अपना मंतव्य प्रकट करते हुए कहते है, ''इसमें अज्ञेयजी ने अपने जीवन को यायावर का चिरंतन पथ स्वीकार किया है। अपनी विभिन्न यात्राओं को रेखाचित्र, स्केच और अलंकृतियों का रूप देकर प्रस्तुत किया है।''[1] अज्ञेय यात्रा को जीवन में महत्त्वपूर्ण मानते हैद्य यात्रा को जीवन का पर्याय मानते है।
'अरे यायावर रहेगा याद' रचना में लेखक ने यात्रा के पड़ाव का विस्तारपूर्वक, स्थूल, व्यापक वर्णन तो किया ही है– साथ ही उसके अंतर्मन के सूक्ष्मता का भी वर्णन किया है। यह रचना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।
यात्रा को जीवन का पर्याय मानते हुए अज्ञेय यात्रा को जीवन की अमूल्य निधि मानते है। यात्री जीवन का परिचय प्रतीकात्मक रूप में अपने शब्दों में इस प्रकार दिया है, ''चल चल देता है लाद–लाद कर बार–बार बनजारा सब ठाठ धरा रह जाता, धन बस दूर क्षितिज का तारा! यायावर को भटकते चालीस बरस हो चले, किंतु इस बीच न तो वह अपने पैरों तले घास (या मॉस) जमने दे सका है, 'न कुछ ठाठ जमा सका है, न क्षितिज को कुछ निकट ला सके है– उसके तारे को छूने की तो बात ही क्या! कितने स्थल उसने देखे जहाँ बैठकर ऋषियों ने देहों पर वाल्मीक उगा लिये, जहाँ मुनि तपस्या करते–करते पाषाण हो गए, जहाँ देवता जम कर पर्वत श्रृंग बन गए, जहाँ मानवों ने ऐहिक कांक्षाओं–वासानाओं से मुक्ति पाई किंतु यायावर ने समझा है कि देवता भी जहाँ मंदिर में रूके कि शिला हो गए और प्राण संचार के लिए पहली शर्त है गति, गति, गति।''[2]
'अज्ञेय' ने अपनी इस रचना में 'अरे यायावर रहेगा याद' में प्रकृति, इतिहास, धर्म, पुराण, संस्कृति, पुरातत्व, देशप्रेम वैज्ञानिक शोधात्मक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। इन विविध विषय के के प्रति उनके दृष्टिकोण एवं गहन अध्ययन को मद्दों के आधार पर विवेचन कर सकते है.

मूल शब्दः बहुविषय, ज्ञाता–अज्ञेय, अरे यायावर रहेगा याद

वैज्ञानिक एवं शोधात्मक दृष्टिकोण

अज्ञेय की उपर्युक्त रचना में 'किरणों की खोज' में यात्रावृत्त रावलपिंडी–कोहमरी–दुमेल और कश्मीर की यात्राओं का वर्णन है। इस यात्रा में कॉस्मिक किरणों की खोज के लिए जो अभियान चलाया था उसका एक सदस्य लेखक भी थे। इस किरणों के संबंध में अनेक वैज्ञानिक खोजों ने मनुष्य के ज्ञान का विकास किया है। स्विट्जरलैंड, अमेरिकन वैज्ञानिकों ने इसमें अधिक संशोधन किया है। इन किरणों के खोज के उद्देश्यों को लेकर, उपयोगिता के स्तर पर मन में कौतुहल पूर्ण प्रश्न उठना स्वाभाविक है, इस बारे में लेखक कहते है, ''क्या इन किरणों का चिकित्सक उपयोग हो सकता है? आग लगाने, विमान0, जहाज उड़ाने में? ये सब प्रश्न वैज्ञानिकों को उत्सुक कर रहे थे। शुद्ध विज्ञान के क्षेत्र में यह प्रश्न भी कौतुहलवर्धक था कि इन किरणों से पदार्थ की अंतः रचना पर उर्जा और पदार्थ के संबद्ध पर क्या प्रभाव पड़ता है।''[3] अर्थात अज्ञेय और अज्ञेय की टीम की इस यात्रा का उद्देश्य उपयोगिता के स्तर पर जिस तरंग की लंबाई जितनी कम और 'फ्रीक्वेंसी' जितनी अधिक होगी, उसकी भेदकता भी उतनी अधिक होगी। इसी भेदकता पर ये टीम अनुसंधान कर रही थी। इस संदर्भ के सारे संस्मरण लेखक ने इस रचना में जीवंतता के साथ चित्रित किये हैं।

चिंतन, संवेदना

लेखक ने इस रचना में जीवन के प्रति दृष्टिकोण दर्शन, चिंतन, संवेदना को सर्वत्र स्थान दिया है। अपने चिंतन और विचारों को यात्रा साहित्य के माध्यम से बिखेरा है। इस रचना के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए डॉ. पुष्पा विजेंद्र कहती है, ''अरे यायावर रहेगा याद? अज्ञेय का प्रथम यात्रावृत्त है– जिसमें भारतीय इतिहास, संस्कृति और स्थलों के माध्यम से अज्ञेय ने प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन दर्शन के चित्र अत्यंत प्रभावी ढंग से अंकित किये है।''[4] हिमालय के सौंदर्य का बखान करते हुए उसकी भव्यता, विशालता, वैभव देखते हुए अनायास ही लेखक का भव्य चिंतन मुखरित होता है, जैसे– ''उस दृश्य के अनिर्वचनीय सौंदर्य को वही जान सकता है, जो बार बार उसकी अलंकार निरपेक्ष भव्यता का अकस्मात थप्पड सा खाकर लड़खड़ाया हो और फिर सँभाला हो...''[5]

धर्म विधियों, रूढ़ियों संबंद्धि दृष्टिकोण

पूर्व असम में परशुराम कुंड पर यात्रा में लाखों लोग, भाविक आते हैं। वे जिस श्रद्धा, आस्था, भक्ति से वहाँ आते हैं, अपनी समर्पण भावना को दर्शाते है उसका वर्णन करते हुए धार्मिक विधियों के नाम पर चलनेवाले गैर वर्तन व्यवहार पर व्यंग्य कसा है। उन्हींके शब्दों में, ''स्नान से पाप धुल जाते हैं, पाप तो दिखते नहीं, अतः उनके दृश्य प्रतीक के रूप में जिन वस्त्रों से स्नान किया जाता हैं, उन्हें कुंड पर ही छोड़ देने की प्रथा है। इस सरल उपाय से यात्री अपने पाप वहीं छोड़ कर चले आ सकते हैं।''[6] मानवी जीवन के आंडबरपूर्ण वर्तन का लेखक शोधात्मक दृष्टिकोण से विवेचन करते है और जीवन सत्य का उद्‌घाटन करने का प्रयास करते है।

संस्कृति विषयक

'अज्ञेय' ने इस रचना में आसाम के जीवन के विविध पहलुओं को दर्शाया है। संस्कृति के विविध आयामों को खोज पूर्ण अंगों से वर्णन किया है। अज्ञेय के यात्रा के उद्देश्य को लेकर डॉ. पुष्पा विजेंद्र कहती है, ''अज्ञेय का अभिप्राय किसी यात्रा का वर्णन भर करना नहीं है। वह तो उन प्रभावों को व्यक्त करता है जो जीवन के आवर्तो में व्यक्त होते हैं।''[7] विशिष्ट भूप्रेदश के लोग अपने आचार–विचार वर्तन में अलग–अलग विशेषता लिए होते हैं। आसामी लोगों को वर्णन करते हुए लेखक कहते है, ''अँसमिया लोग खूब हँसते है। बाधाओं पर और भी अधिक हँसते है। इसलिए कि वे बाधा मानते नहीं, वह तो केवल काम न करने की एक युक्ति है और काम न करना पड़े तो क्यों न हँसा जाए!''[8] उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि लेखक ने संस्कृतिगत बातों को सीधा मनोविश्लेषण के स्तर पर कसने का प्रयास किया है।

प्रथा, परंपरा, उत्सव

लेखक ने 'कुलु' के दशहरे का वर्णन किया है। दशहरे के समय यहाँ भारी मेला लगता है। मेले का बहुत ही चित्रात्मक वर्णन करते है जिससे जनसंस्कृति का विशिष्ट प्रभाव स्पष्ट होता है। लेखक के शब्दों में, ''देशी और काँच, बिल्लौर और पत्थर के मनकों के हार, न जाने–क्या–क्या चीजें वहाँ आती हैं और देखते–देखते बिक जाती है। दिन भर में हजारों की संपत्ति हाथ बदल लेती है– तमाशे होते हैं, नाच होते हैं, गाना बजाना होता है, जगमग रोशनी होती है।''[9] कुलु का उत्सव विशिष्ट जनसमाज एवं संस्कृति का दयोतक है। इस वातावरण को अपनी सजग दृष्टि से अपनी रचना में लेखक ने चितेरा है।

जीवनदर्शन

लेखक ने इस रचना में ज्यादातर स्थूल वर्णनों की अपेक्षा अंतर्मन की सूक्ष्मता को स्थान दिया है। कहीं कहीं यह अंतर्मन का सूक्ष्म वर्णन अध्यात्म एवं जीवन–दर्शन, चिंतन का रूप ले लेता है। लेखक जीवन में विज्ञान के विद्यार्थी रहे है– फिर भी परम सत्ता में उनका गहरा विश्वास रहा है। प्रकृति का रूप वैभव देखते हुए लेखक उससे परम तादात्म्य स्थापित करता है, ''आसपास मेघो का नीरव खेल देखते हुए स्वयं उस अपलक दर्शन में, उस अविराम खोज में, उस अनिर्वचनीय एकात्म्य में खो गया हूँ जो सबसे जोड़ देता है।''[10]

ग्राम्य जीवन के बदलते स्वरूप

लेखक ने ग्राम्य जीवन के बदलते स्वरूप एवं लुप्त होती प्राकृतिकता, प्रकृति पर मनुष्य का दबाव, अतिक्रमण के प्रभाव भी व्यक्त की है। लेखक कहते है, ''हम समतल भूमि के रहने वाले ही अपने पतन की सड़ायँध वहाँ पहाड़ों में ले गए हैं। अपनी भद्दी छाप से ही हमने पहाड़ों का सौंदर्य विकृत कर दिया है, यहाँ तक कि आज भारत के पहाड़ी इलाकों में शायद ही कोई ऐसा स्थल बचा है जो दूषित नहीं हो गया है जिसे दर्पोध्दत बेवकूफ सभ्य मानव ने यह कह कर कि 'तुम सुंदर हो? तो लो मैं– अपने कलंक से तुम्हें भी काला कर सकता हूँ।''[11] यहाँ लेखक ने शहरीकरण के प्रभाव से विद्रुप होती प्रकृति जन्य कस्बे, गाँवों, पहाड़ो की ओर इशारा किया है।

इतिहासविषयक

अज्ञेय ने अपनी रचना में भारत के प्राचीन स्थलों से जुड़े इतिहास के अनेक पक्षों का ज्ञानवर्धक, रोचक और भावुक चित्रण किया है। 'एलुरा' यात्रावृत्त में खुल्दाबाद बस्ती जिसका अर्थ स्वर्ग की बस्ती है, जिसकी पश्चिमी ढाल पर एलुरा की गुफाएँ है। वास्तव में शिल्प में ये अद्वितीय हैं।

यही विशाल शिलाखंड को काटकर बनाया गया गुफाओं से घिरा हुआ मंदिर है, जिसे कैलाश के समकक्ष कहा जा सकता है। यहाँ की गुफाएँ तीन श्रेणियों में विभाजित है– बौद्ध, जैन और ब्राह्मण गुफाएँ। इसमें कैलाश अथवा रंगमहल सबसे प्रसिद्ध है। एलुरा की चैत्य गुफा में बौद्ध मूर्ति का और रावण द्वारा कैलाश धारण का चित्र भी दिया गया है। अज्ञेय ने सभी गुफाओं का व्यापक रूप से वर्णन किया है। इस संदर्भ में डॉ. रघुवंश कहते है, ''अपने देश और उसके विभिन्न सांस्कृतिक स्तरों को पूरी सहानुभूति, निष्ठा और जागरूकता के साथ लेखक ने समझाना चाहा है और यात्रा के भौगोलिक वैविध्य को तो उसने रंगो में अंकित किया ही है।''[12]

अज्ञेय की इस भारत यात्रा में कभी–कबार जोखिम भरे अवसर भी आयें।

कई बार तो मृत्यु भी सामने आयी पर सृजन की चेष्टा, मनुष्य को जीवन और उसका सत्य दे देती है। इसी सत्य के बीच अज्ञेय ने अपनी इस रचना में इतिहास, धर्म, दर्शन, चिंतन, भूगोल, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, प्रकृति को जिवंतता के साथ, सत्यता के साथ खड़ा कर दिया है। इस रचना में भौगोलिक चित्र के साथ परंपरा, इतिहास, संस्कृति और मानव जीवन का स्वरूप मिलता है। इस संदर्भ में डॉ. पुष्पा शर्मा कहती है– ''यह सारा वर्णन विवरणात्मक न होकर अत्यंत रचनात्मक है और अज्ञेय ने संसार के सौंदर्य के बीच मानव जीवन की विभिन्न अर्थवत्ताओं का अन्वेषण और चिंतन किया है।''[13]

इस प्रकार इस रचना में अज्ञेय ने संवेदना और सौंदग्र का अनोखा समन्वय सृजित किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. सुरेंद्र माथुर– हिंदी यात्रा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, संस्करण–1962 साहित्य प्रकाशन मालीवाडा, दिल्ली, पृ.190
2. अज्ञेय– अरे यायावर रहेगा याद, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, पृ.16
3. वही, पृ.84
4. पुष्पा विजेंद्र– वीणा (श्यामसुंदर व्यास) वर्ष 66, अंक–4, अप्रैल 1993, पृ.47
5. अज्ञेय– अरे यायावर रहेगा याद, पृ.30
6. वही, पृ.220
7. पुष्पा विजेंद्र– वीणा (श्यामसुंदर व्यास) वर्ष 66, अंक–4, अप्रैल 1993, पृ.47
8. अज्ञेय– अरे यायावर रहेगा याद, पृ.117
9. अज्ञेय– अरे यायावर रहेगा याद, पृ.33
10. वही, पृ.123
11. रघुवंश– हिंदी साहित्य, प्रथम संस्करण 1 नवबंर 1969, भारतीय हिंदी परिषद, प्रयाग, पृ.548
12. पुष्पा शर्मा– वीणा (श्याम सुंदर व्यास), अप्रैल 1993, वर्ष–66, अंक–4, पृ.50